जब **बिल ट्रेलर** ने चित्रकारी शुरू की

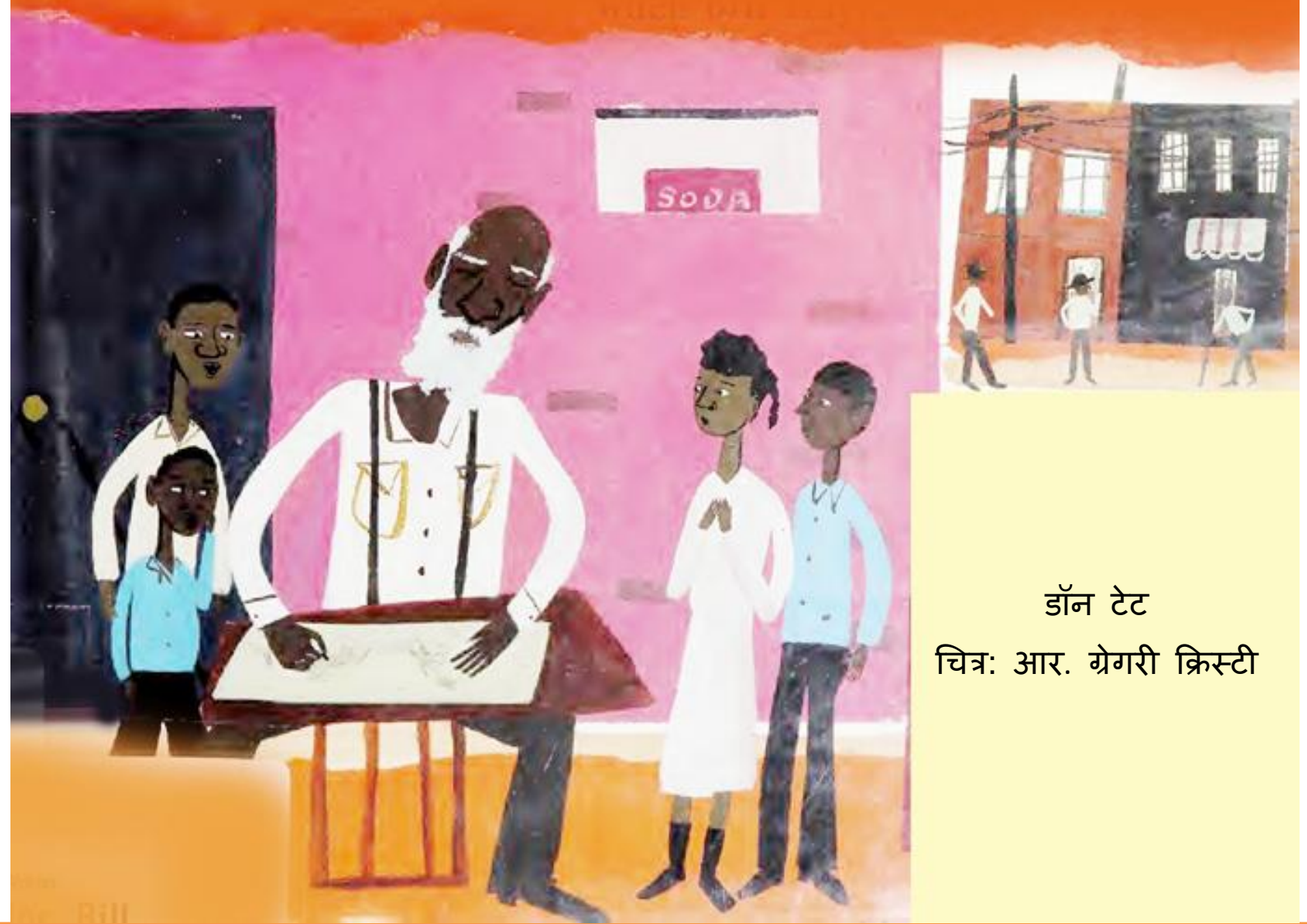

डॉन टेट

चित्र: आर. ग्रेगरी क्रिस्टी

जब **बिल ट्रेलर** ने चित्रकारी शुरू की

अलबामा के कपास के खेत में एक गुलाम लड़के के रूप में पले-बढ़े बिल ट्रेलर ने पूरे दिन तपते खेतों में काम किया. जब गुलामी समाप्त हुई, तब बिल का परिवार बटाईदार के रूप में फार्म पर रहा. बड़े होने तक बिल वहीं रहा. उसने अपने परिवार का पालन-पोषण किया, और ज़मीन और जानवरों की देखभाल की.

1935 में बिल इक्यासी साल का था और वो अपने फार्म पर बिल्कुल अकेला था. इसलिए, उसने अपना बोरिया बिस्तर बाँधा और वो अलबामा की राजधानी मोंटगोमरी चला गया. वो अकेला गरीब, उस व्यस्त शहर की सड़कों पर घूमता रहा. लेकिन अपने भीतर बिल के पास फार्म पर काम करने और ज़िंदगी जीने की यादों का भंडार था, और जल्द ही वे यादें चित्रों में बदल गईं. बिल ने लोगों, स्थानों और जानवरों, अपने पूर्व जीवन के साथ-साथ, आसपास शहर के दृश्यों को पेन्ट करना शुरू किया.

आज बिल ट्रेयलर को सबसे महत्वपूर्ण स्व-शिक्षित अमेरिकी लोक कलाकारों में से एक माना जाता है. यह पुस्तक एक जीवंत आर्टिस्ट को श्रद्धांजलि है जिसने बारह सौ से अधिक ऊर्जावान और अक्सर हास्य चित्रों से दुनिया को समृद्ध किया.

1939 में अलबामा के मोंटगोमरी में गर्मियों की शुरुआत थी. मोनरो एवेन्यू शहर में, एक बुजुर्ग व्यक्ति लकड़ी के एक क्रेट पर बैठा था. उसकी गोद में एक बोर्ड रखा हुआ है और उसके हाथ में एक छोटी सी पेंसिल थी. उसने कपड़े धोने वाले साबुन के डिब्बे के पीछे एक चित्र बनाना शुरू किया.

यह आदमी कौन था, और किस कारण उसने पचहत्तर साल की उम्र में चित्र बनाना शुरू किया? उसका नाम बिल ट्रेयलर था, और अगर लोगों ने उससे पूछा होता, तो वो कहता, "चित्रकारी, वो बस मेरे पास अपने आप आ गई."

1850 के दशक में, जॉर्ज हार्टवेल ट्रेयलर और उनकी पत्नी के पास बेंटन, अलबामा के पास एक कपास का खेत था. ट्रेयलर के पास बीस से अधिक दास भी थे. 1854 के दौरान, गुलाम परिवारों में से एक लड़के का जन्म हुआ. उसको बिल नाम दिया गया. उनका उपनाम 'ट्रेलर' बन गया, जो उसके स्वामी का नाम था.

जिस क्षण सूरज आकाश में चमकता और जब तक वो रात में गायब नहीं होता, गुलाम गर्म, धूल भरे खेतों में कपास बीनते थे. जब बिल काफी बूढ़ा हो गया, तो भी उसे काम करना पड़ता था : खरबूजे तोड़ना, पानी लाना, लकड़ी इकट्ठा करना आदि.

अपना काम खत्म करने के बाद, बिल कभी-कभी अलबामा नदी के किनारे अपने दोस्तों से मिलता था. वे ठंडे पानी में कूदते थे और वहां से गुजरने वाली स्टीमबोट्स की ओर अपने हाथ हिलाते थे.

अनजाने में, बिना किसी प्रयास के बिल ने इन दिनों की यादों को, अपने भीतर गहराई में सहेज लिया था.

जब 1865 में गृह युद्ध समाप्त हुआ, तो फिर गुलामों को मुक्त कर दिया गया. बहुत से लोगों ने अपने पूर्व मालिकों को छोड़ दिया, लेकिन बिल के परिवार ने ट्रेयलर के खेत पर ही रहने का निश्चय किया. वे वहां पर बटाईदार के रूप में काम करते थे, खेती करते थे और अपनी फसल और मुनाफे को उन लोगों के साथ बांटते थे जो कभी उनके मालिक थे.

यद्यपि युद्ध समाप्त हो गया था, फिर भी उत्तरी सैनिकों ने कई दक्षिणी खेतों, गांवों और कस्बों को जलाना जारी रखा था. युवा बिल और उसके परिवार ने ट्रेयलर के खेत, उपकरण और जानवरों को नष्ट होते हुए देखा था. उसमें बिल का परिवार बाल-बाल बच गया था. बाद में उन्होंने अपने घर का पुनर्निर्माण किया और कई वर्षों तक उसी ज़मीन पर काम करना जारी रखा.

बिल ने इन दिनों की यादों को अपने अंदर गहराई तक सहेज कर रखा था.

1881 तक बिल एक वयस्क और मेहनती किसान बन गया था. उसने लोरिसा नाम की एक युवती से शादी की, और वे एक नाले के पास एक छोटे से केबिन में रहते थे. जल्द ही उनका घर भूखे बच्चों के एक झुंड से भर गया.

पैसे की बड़ी कमी थी. बिल ने एक बार कहा था, "काश वो इमारत पैसे से भरी होती, लेकिन फिर भी आप उसे नहीं खा सकते थे." इसलिए घर में हर कोई—यहां तक कि सबसे छोटा बच्चा भी —खेत में अपना खाली पेट भरने के लिए आवश्यक भोजन उगाने के लिए काम करता था.

बिल ने उन दिनों की यादों को अपने अंदर तक सहेज कर रखा था.

बिल के पास कई जानवर थे, जिसमें एक खच्चर भी था जो काम पूरा करने में उसकी मदद करता था. लेकिन कभी-कभी बिल को हल के साथ आते देखकर खच्चर जिद्दी हो जाता था. "जैसे ही खच्चर हल देखता है, वैसे ही वो झूलने लगता है .. .. शायद खच्चर को वो आत्म-सम्मान अपनी माँ से मिला होगा," बिल ने गुस्से में कहा क्योंकि खच्चर ने काम करने से इनकार कर दिया था.

खेत के जानवर भी बिल के साथ मज़ाक करते थे. बिल जानवरों को जब अपने-अपने काम करते हुए देखता तो वो हंस पड़ता था. मुर्गियां यार्ड में आत्मविश्वास से पंख फड़फड़ाती थीं. बिल्लियाँ छतों पर संतुलित होकर चलती थीं. सांप, घास में से बिना किसी कारण के फिसलते रहते थे. कुछ जानवरों का व्यक्तित्व बिल को उसके जान पहचान वाले लोगों की याद दिलाता था. बिल ने इन यादों को भी अपने अंदर सहेज कर रखा था.

शनिवार की रात को पुरुष सारंगी की धुन पर नाचते थे जबकि महिलायें अपनी बुलंद आवाज़ों में गीत गाती थीं. बच्चे संगीत की थाप पर अपनी उंगलियाँ थपथपाते हुए आगे-पीछे दौड़ते थे. यहां तक कि पेड़ों में बैठे उल्लू भी संगीत की धुन पर अपना सिर हिलाते थे.

उत्सव के बाद आदमी लोग अपने कुत्तों को लेकर देर रात तक शिकार और मछली पकड़ने जाते थे. अगले दिन बिल शकरकंदी भूनता था और जो कुछ उसने पकड़ा होता उसे भूनकर रात के खाने में परोसता था.

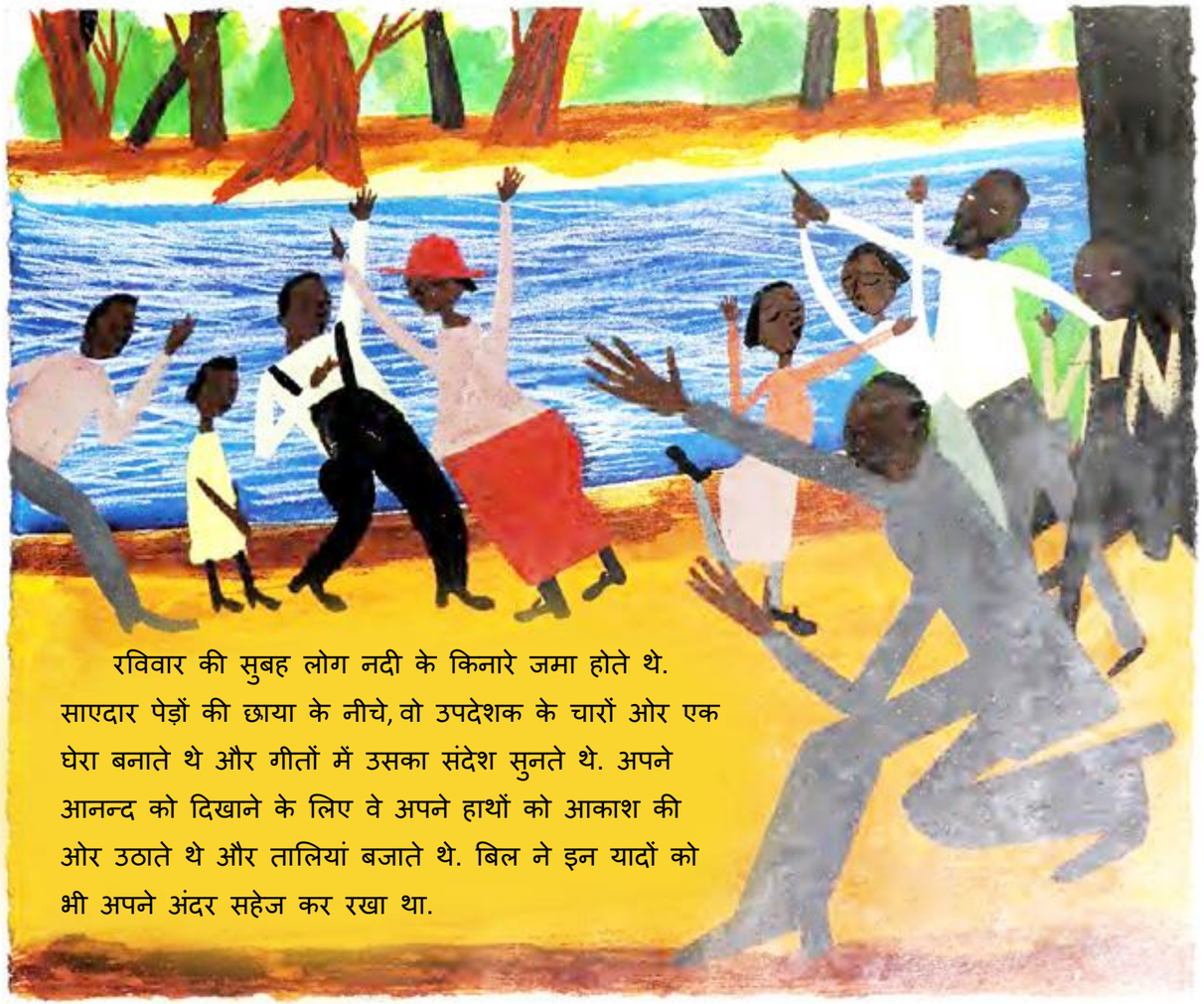

रविवार की सुबह लोग नदी के किनारे जमा होते थे. साएदार पेड़ों की छाया के नीचे, वो उपदेशक के चारों ओर एक घेरा बनाते थे और गीतों में उसका संदेश सुनते थे. अपने आनन्द को दिखाने के लिए वे अपने हाथों को आकाश की ओर उठाते थे और तालियां बजाते थे. बिल ने इन यादों को भी अपने अंदर सहेज कर रखा था.

बिल ने अपना पूरा जीवन, ट्रेयलर के फार्म पर बिताया था. 1935 तक वो इक्यासी साल का हो गया था. उसकी उम्र बहुत अधिक थी और वो बिल्कुल अकेला था. "मेरे गोरे मालिक मर गए हैं और मेरे बच्चे इधर-उधर चले गए हैं," बिल ने कहा. उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई थी. जिन लोगों के वो करीब था वे सभी लोग अब चले गए थे. अब बिल के पास फार्म पर रहने का कोई कारण नहीं बचा था. फिर उसने अपना बोरिया-बिस्तर बाँधा और वो पास के शहर मोंटगोमरी की ओर चल दिया.

शहर में नौकरी पाना आसान नहीं थी. बिल ने कभी पढ़ना-लिखना नहीं सीखा था, और फार्म पर उसके काम ने उसे शहरी जीवन के लिए तैयार नहीं किया था. आखिर में उसे जूतों के एक कारखाने में नौकरी मिली. लेकिन बिल के जोड़ों में दर्दनाक गठिया हो गया और जल्द ही उसे अपनी नौकरी छोड़ने को मजबूर होना पड़ा.

कुछ समय के लिए बिल ने अमरीकी सरकार द्वारा दी गई पेंसिलें बेंचने का काम किया. उसने उसमें ज्यादा पैसा नहीं कमाया, और वह जल्द ही बेघर हो गया. दिन के दौरान वह मॉन्टगोमरी शहर में घूमता रहता था. मॉन्टगोमरी शहर एक रोमांचक जगह थी. बाजारों, दुकानों और रेस्तरां के अंदर और बाहर लोगों का आना-जाना हमेशा लगा रहता था. सड़कों पर कारें और घोड़ा-गाड़ियां दौड़ती थीं.

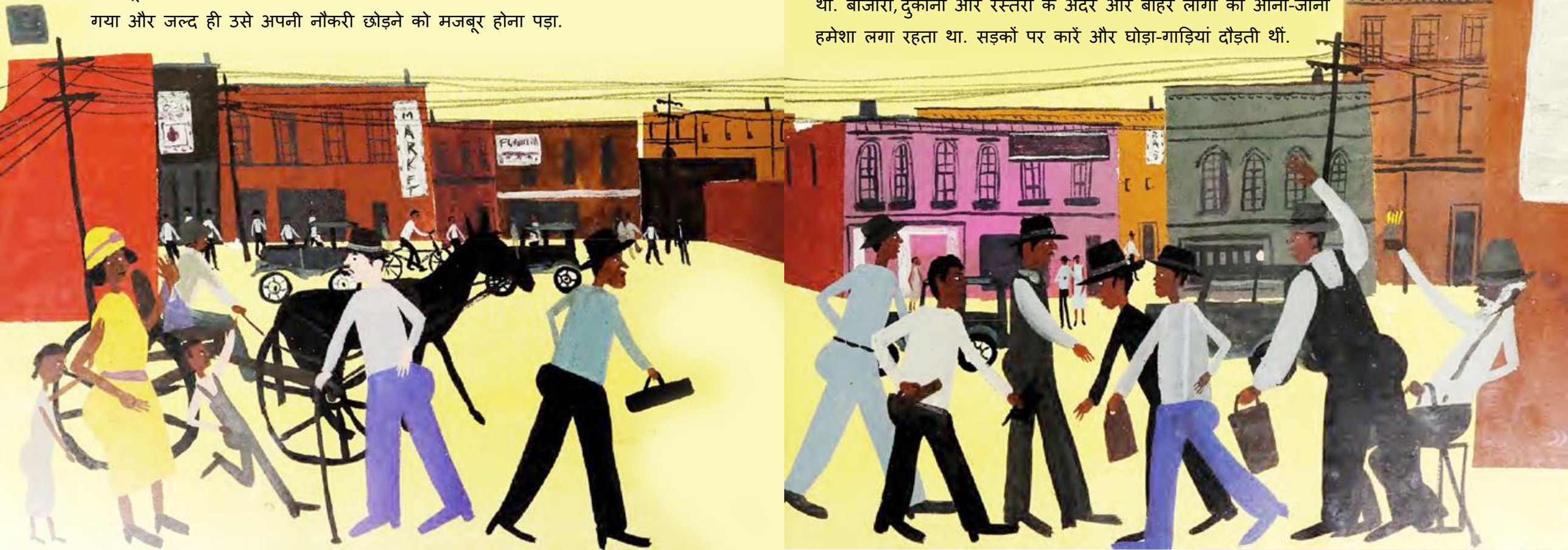

रात में बिल फुटपाथों पर, दरवाजों पर, या गली-मोहल्लों में सोता था. फिर उसकी रॉस-क्लेटन फ्यूनरल होम के मालिकों से दोस्ती हुई. उन्होंने बिल को अपने एक गोदाम में सोने के लिए जगह दे दी. उसने लकड़ी के तख्ते के ऊपर फूस डाली और ऊपर से कपड़ा बिछाया. वहाँ ताबूतों के बीच बिल ने अपने थके हुए शरीर को आराम दिया.

जैसे ही वो रात में गोदाम में लेटता, बिल को बेहद अकेलापन महसूस होता था. उसे अपने परिवार, अपने खेत, अपने जानवरों की याद आती थी.

उसने अपने भीतर गहराई में उन सभी सहेजी गई यादों को तरोताज़ा होते हुए पाया.

बिल को वे यादें सताने लगीं. 1939 की शुरुआत में एक दिन उसने एक पेंसिल की ठूंठ और एक बेकार कागज का टुकड़ा उठाया और अपनी यादों को तस्वीरों में उँडेलना शुरू किया. बिल के पहले चित्र साधारण चीज़ों के थे : बिल्लियों, कप, जूते, टोकरियों आदि के. फिर उसने मानव और जानवर भी बनाना शुरू किए. वो सीधी रेखाओं को खींचने के लिए एक छड़ी की किनारे का उपयोग करता था. आयत शरीर बन जाते. गोले, सिर और आंखें बन जातीं. रेखाएँ, फैले हुए हाथ और पैर बन जातीं. वो स्केच की गई रेखाओं और आकृतियों को भर देता और किनारों को चिकना कर देता था.

मुनरो एवेन्यू की फुटपाथ, बिल का आर्ट स्टूडियो बन गई. एक लकड़ी की क्रेट उस कलाकार की बेंच थी. स्क्रैप कार्डबोर्ड और पुराने पेपर कार्टन उसके कैनवस थे जिन पर वो अपने चित्र उकेरता था. उसके पास में ही एक लोहार की दुकान थी जहाँ हथोड़ों की ठक-ठक बिल को काम करते समय बैकग्राउंड म्यूजिक मुहैया कराती थी.

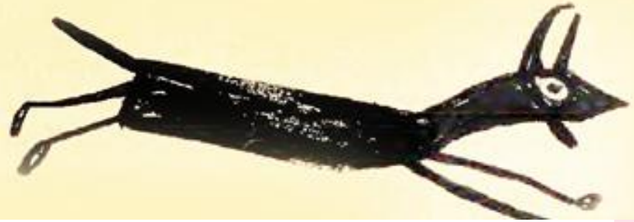

सभी उम्र के लोग बिल को काम करते हुए देखने आते थे. उनमें एक प्रशंसक ने बिल को उसका नाम लिखना सिखाया. जल्द ही वह गर्व से अपने चित्रों पर हस्ताक्षर करने लगा.

बिल अक्सर पास के एक बाड़े पर अपने बनाए चित्र टांग देता था. जब राहगीर उसके चित्र के बारे में सवाल पूछते तो बिल को उसमें कोई आपत्ति नहीं होती. वो काफी बातूनी भी था. लेकिन जब बिल अपने काम में व्यस्त होता तब वो किसी से भी बातचीत नहीं करता था.

1939 की गर्मियों की सुबह, चार्ल्स शैनन नाम के एक युवा कलाकार ने बिल को लकड़ी की क्रेट पर बैठे, चित्र बनाते हुए देखा. चार्ल्स ने बिल के हाथों को रेखाएं बनाते हुए देखा, और फिर उन्हें भरते हुए देखा. बिल के चित्र किसी ताल के साथ नृत्य करते थे. चार्ल्स ने वैसे चित्र पहले कभी नहीं देखे थे.

चार्ल्स नियमित रूप से बिल के पास जाने लगा. वो बिल के काम का समर्थन करना चाहता था. वह बिल के लिए आर्ट का सामान लाया: रंगीन पेंसिल और पेंटब्रश, पोस्टर पेंट और उच्च गुणवत्ता वाला कागज. लेकिन बिल को अपने ही तरीके से चीज़ें करना पसंद थीं. उसने रंगीन पेंसिल और कुछ पेंट इस्तेमाल जरूर किए, लेकिन उसने फेंके हुए बैग, साइन-बोर्ड और कार्डबोर्ड के बक्सों के पीछे पेन्ट करना जारी रखा.

बिल के हाथ स्थिर और आत्मविश्वास से भरे थे. कुछ गड़बड़ होने से वो चिंतित और विचलित नहीं होता था और वो लगभग कभी भी बनाए चित्र को मिटाता नहीं था. पेंटिंग करते समय, उसे गहरे रंग अधिक पसंद थे: गहरा नीला, चमकीला लाल, धूप वाले पीला और मिट्टी के भूरा रंग. वो सीधे पेंट के जार से रंग लेता था और बहुत कम ही मिश्रित रंगों का इस्तेमाल करता था.

जल्द ही बिल नॉर्थ लॉरेंस स्ट्रीट पर एक छायादार स्थान पर चला गया. वहाँ उसने अपनी यादों को चित्रों में उँडेलना जारी रखा. वो अक्सर देर तक चित्र बनाता था. उसने चौड़ी आंखों वाले उल्लुओं, एक बड़े लाल कुत्ते और लड़ाई करने वाली बिल्लियों के चित्र बनाए. उसने घोड़े पर सवार चित्तीदार सांपों और शिकारियों के चित्र बनाए.

कभी-कभी बिल ने अपनी तस्वीरों के बारे में बात भी की. "मेरा आज जुताई करने का बहुत मन कर रहा था, इसलिए मैंने एक आदमी को हल जोतते हुए दिखाया," उसने कहा. "टोकरी के ऊपर पक्षी और उसे इस बात का पता ही नहीं है," बिल ने अपने एक हास्य चित्र के बारे में मजाक करते हुए कहा.

बिल ने मोंटगोमरी की सड़कों पर देखे गए लोगों को भी चित्रित किया; लंबी टोपी पहने पुरुष और पैटर्न वाली पोशाक पहने महिलाएं, सड़क पर चलने वाले कुत्ते और बैसाखी लिए एक आदमी. बिल ने लोहार की दुकान और लोहार के औजारों के भी चित्र बनाए.

जब लोग उसे किसी चित्र के लिए कुछ सिक्के देते तो बिल बहुत खुश होता. "कभी-कभी वे उन्हें तब भी खरीदते हैं जब उन्हें उनकी आवश्यकता नहीं होती है," उसने टिप्पणी करते हुए कहा.

चार्ल्स शैनन, बिल के काम का इतना गहरा प्रशंसक था कि उसने बिल के चित्रों के एक शो की व्यवस्था की. प्रदर्शन, बिल ट्रेयलर—पीपुल्स आर्टिस्ट, फरवरी 12, 1940 को न्यू-साउथ आर्ट गैलरी में आयोजित किया गया. बिल के लगभग सौ चित्र गैलरी की दीवारों पर लटकाए गए.

बिल बिना कुछ कहे धीरे-धीरे एक तस्वीर से दूसरी तस्वीर की ओर बढ़ता हुआ गया. अंत में, उसने बेंत से एक पेंटिंग की ओर इशारा किया और कहा, "यह बूढ़ा घोड़ा, कितना मोटा है, लेकिन यह बेचारा बूढ़ा खच्चर एकदम पतला है, जिसने अपने पूरे जीवन भर काम किया है."

उस दिन बिल की कोई भी कलाकृति नहीं बिकी, लेकिन उसने बिल को बिल्कुल परेशान नहीं किया. पैसा उनके चित्रों के पीछे की प्रेरणा नहीं था. अपने जीवन की सहेजी गई यादों का आनंद लेने के लिए ही बिल ने चित्र बनाए थे. उन्हें यह नहीं पता था कि उनके चित्र दूसरों को भी आनंदित करेंगे. लेकिन इस बात को समझे बिना ही बिल ट्रेलर ने अपनी यादें दुनिया के साथ साझा कीं.

अंत के शब्द

मुनरो एवेन्यू, सीए पर काम पर बिल ट्रेयलर. 1940; जीन और जॉर्ज लुईस द्वारा फोटो.

लोग बताते हैं जब बिल ट्रेयलर न्यू साउथ आर्ट गैलरी में अपने काम के प्रदर्शनी का दौरा करते तो वो कमरे के चारों ओर घूमते थे और कभी-कभी किसी कलाकृति पर टिप्पणी भी करते थे जैसे कि उन्होंने उसे पहले कभी देखा ही न हो. उत्तर लॉरेंस स्ट्रीट पर लौटने के बाद, उन्होंने फिर कभी प्रदर्शनी का उल्लेख नहीं किया.

चार्ल्स शैनन (1914-1996) का जन्म मोंटगोमरी, अलबामा में हुआ था. उन्होंने क्लीवलैंड स्कूल ऑफ आर्ट में अध्ययन किया, और वहां रहते हुए उनकी दक्षिण की संस्कृति को चित्रित करने में दिलचस्पी पैदा हुई, खासकर अफ्रीकी अमेरिकियों में. अलबामा वापस जाने के बाद, शैनन 1939 में, बिल ट्रेयलर से मिले, और कुछ ही हफ्तों के भीतर वो उनके लिए आर्ट की सामग्री लाने लगे. अगले तीन वर्षों में ट्रेयलर ने 1,200 और 1,500 चित्र और पेंटिंग बनायीं. शैनन ने ट्रेयलर की कई कलाकृतियां खरीदकर ट्रेयलर का समर्थन जारी रखा.

शैनन ने जनवरी 1942 में न्यू यॉर्क के रिवरडेल में एथिकल कल्चर के हेल्डस्टन स्कूल में ट्रेयलर के चित्रों के दूसरे प्रदर्शन की व्यवस्था की. न्यूयॉर्क शहर में आधुनिक कला संग्रहालय ने प्रदर्शनी से सोलह चित्र खरीदने का प्रयास किया, लेकिन शैनन ने संग्रहालय के ऑफर को अस्वीकार कर दिया क्योंकि वो प्रति पीस केवल एक या दो डॉलर ही दे रहे थे.

बिल ट्रेयलर - द मैन विद अम्ब्रेला एंड सूटकेस, 1939

जून 1942 में शैनन को सेना में शामिल किया गया, जहां उन्होंने 1946 तक सेवा की. उस दौरान ट्रेयलर पूरे देश में अपने विभिन्न रिश्तेदारों के घरों में जाकर रहे. उनके बाएं पैर में खराब गठिया हो गया, जिसके कारण उन्हें गैंगरीन हो गया और फिर उस पैर को काटना पड़ा. घाव के ठीक होने के बाद, ट्रेयलर अपने स्थान नॉर्थ लॉरेंस स्ट्रीट पर वापस चला गए.

जब तक शैनन मॉन्टगोमरी लौटे, तब तक ट्रेयलर का स्वास्थ्य और भी खराब हो चुका था. ट्रेयलर सड़क वाला अपना घर छोड़कर शहर के दूसरे हिस्से में अपनी एक बेटी के साथ रहने चले गए. निराश और अप्रेरित होने के बावजूद ट्रेयलर ने पेन्टिंग करना जारी रखा, लेकिन उनके चित्रों ने अब अपनी चिंगारी खो दी थी. अक्टूबर 1949 में, पिचानवे वर्ष की आयु में उनका निधन हुआ.

सार्वजनिक रूचि की कमी के कारण कई वर्षों तक चार्ल्स शैनन ने बिल ट्रेयलर की कला को एक गोदाम में बंद रखा. 1970 के दशक के अंत तक शैनन ने फैसला किया कि वो काल ट्रेयलर के चित्रों को फिर से कला की दुनिया के साथ साझा करने का समय था. नतीजतन, 1982 में वाशिंगटन, डीसी में कॉर्कोरन गैलरी ऑफ आर्ट में ट्रेयलर के काम का प्रदर्शन किया गया. अमेरिका में “ब्लैक फोक-आर्ट” I930-1980 नामक प्रदर्शनी में ट्रेयलर के छत्तीस चित्रों को शामिल किया गया जिससे उनके काम को व्यापक पहचान मिली. तब से बिल ट्रेयलर को, बीसवीं शताब्दी के सबसे महत्वपूर्ण स्वयं-शिक्षित अमेरिकी लोक कलाकारों में से एक माना जाता है. उनकी तस्वीरों को "बाहरी कलाकार" भी माना जाता है, जिन्होंने औपचारिक प्रशिक्षण के बिना ही एक व्यक्ति की हैसियत से, कला रची जो स्थापित संस्कृति और समाज के हाशिए पर थी. ट्रेयलर ने कला स्कूलों, दीर्घाओं और संग्रहालयों की मुख्यधारा की कला दुनिया से पूरी तरह बाहर रहकर अपना काम किया.

बिल ट्रेयलर ने वास्तव में पेंटिंग करना क्यों शुरू की? वो अभी भी एक रहस्य बना हुआ है. शायद चित्र बनाने की क्षमता उनके पूरे जीवन भर रही होगी, लेकिन जब परिस्थितियों ने उसे संभव बनाया तभी वो प्रतिभा निखर कर सामने आई. कारण जो भी रहा हो, अपने ग्रामीण घर से दूर एक शहर की फुटपाथ पर, बिल ट्रेयलर ने कल्पना, हास्य और सादगी के साथ अपने जीवन को फिर से बनाया.